रात्रीक्लास ओमशांति 23–5–67

बच्चे सब किसकी याद में बैठे हैं?बाप और दादा। शिव बाप , दादा है प्रजापिता ब्रह्मा। यह दोनों ही ठहरे उंच ते उंच। वो निराकार, वो साकार। बच्चे जानते हैं कि बाप शिव और दादा ब्रह्मा। हमको शिवबाबा से वर्सा लेना है विश्व के स्वराज्य का। यह सभी भारतवासी जानते हैं कि आज से 5000वर्ष पहले ल.ना. का राज्य था। यह 84का चक्र याद जरूर करना है। तुम सब ब्राह्मणों ने ही 84का चक्र खाया है। ब्राह्मण सो देवता.....सो शूद्र बनते हैं। सतोप्रधान से सतो ,रजो,तमो भी बनते हो। अब तुम ब्राह्मण हो, फिर देवता.....शूद्र बनेंगे। फिर ब्राह्मण बनेंगे। यह नालेज ज्ञान सूर्य बाप दे रहे हैं। सतयुग को सुखधाम ,कलियुग को दुःखधाम कहा जात है। ...सतयुग है सुखधाम फिर पुनर्जन्म लेते2 कलियुग दुःखधाम में आते हैं। यह है 84का चक्र। जो तुम चक्र खाते ही रहते हो। शिवबाबा सबका बाप है। वो ही बेहद का बाप है। लौकिक बाप के होते भी दुःख में याद करते हैं पारलौकिक बाप को। अब बाप आये हैं। तुम स्वर्ग के लिए पुरुषार्थ करते हो। जो करेंगे वो पावेंगे। अब थोड़ा यह बुद्धि से काम लो कि सतयुग में मनुष्य बहुत कम होते हैं। इस समय 500करोड़ हैं। सतयुग में 9लाख भी पूरे नहीं होंगे तो फिर बाकी इतने कहां जावेंगे?शांतिधाम। यह समझने की थोड़ी बात है। तुम बच्चे हो। पुरुषार्थी संगयुग पर। मनुष्य ही पुरुषोत्तम बनते हैं। सिर्फ तुम्हीं संगमयुग पर हो। बाकी सारी दुनियां कलियुग में है। अब बाप आये हैं सतयुग की स्थापना करने। स्वर्ग था तो जरूर बाप ने ही स्थापन किया होगा। तुम यहां आते हो बेहद के बाप के पास। वो भी आत्माओं से बात करते हैं शरीर द्वारा। आत्मा (ही)बोलती और सुनती है। करतूतें अच्छी–बुरी जो करते हैं उनका सारा हिसाब.....सतयुग में विकार का नाम नहीं। अब तुम सम्पूर्ण विकारी बन गये हो। फिर सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। अब अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करते रहो। जितना जास्ती याद करेंगे उतना उंच पद पावेंगे। मानुष से देवता संगम पर बनते हो। यह संगमयुग अति कल्याणकारी है। सो ही पवित्र बनना है और बाप को याद करना है। (उठते), बैठते, चलते शिवबाबा को याद करो और दैवी गुण भी धारण करने हैं। तुम बच्चे जानते हो कि हम बापदादा के बच्चे हैं। वर्सा शिवबाबा से लेते हैं ब्रह्मा....। ब्रह्मा की आत्मा को भी उनसे वर्सा मिलता है। अब तुम कौड़ी से हीरे जैसा बनने पुरुषार्थ कर रहे हो। पुरुषार्थ न किया तो उंच पद नहीं। पुरुषार्थ तो सबके लिए बहुत सहज है। तुम हो गॉड फादरली स्टुडेंट। यह गुरू भी है। कोई भी गुरू कब वापस नहीं ले जाते। पवित्र नहीं बना सकते। वो हैं सब भक्तिमार्ग के ढेर के ढेर गुरू।

<u>24–5–67रात्रीक्लास–</u> इस स्कूल में कोई भी बूढ़े हों, बहरे हों, लंगड़े हों सब पढ़ सकते हैं। पढ़ना तो आत्मा को ही है। अब परमात्मा सब आत्माओं को तो नहीं पढ़ावेंगे ना। इसलिए तुमको समझाना पड़ता है कि बाबा ऐसे2 कहते हैं। बाप बच्चों के लिए कहते हैं कि तुम सतोप्रधान विश्व के मालिक थे। बाप ही आकर याद दिलाते हैं। यहां आते हो बाप के पास। यहां सम्मुख आकर बाप से सुनेंगे ,समझेंगे। कोई–कोई नये आते हैं तो आग्रह करते हैं कि देखें। बाहर वालों को आने के लिए इजाजत नहीं देते हैं। बाकी मित्रसम्बंधी हैं तो वो कहां नाराज नहीं हो जावें तो इजाजत दे देते हैं। भले कहते हैं कि हमने बाबा की मुरली सुनी समझी। शिवबाबा ने यह–यह समझाया। जो भी बाबा ने सुनाया वो हमने सुना। चले जावेंगे। तुम कहेंगे कि कुछ भी समझा नहीं है। रिपीट करना सहज है। समझना और बात है। शिवबाबा को याद कोई करते नहीं हैं। जैसे

कि कुछ भी नहीं समझते हैं। तकदीर में ही नहीं बैठना है तो मुश्किल पड़ जाती है। सहज भी बहुत है ;परंतु तकदीर में नहीं है तो कब भी नहीं समझेंगे। वास्तव में यह जैसे कि इश्वरीय दरबार भी है। ईश्वर की दरबार दैवी दरबार से भी उंच है। गुरू नानक की दरबार कहते हैं ना। फिर भी उंच ते उंच दरबार है बाप की ;क्योंकि यहां उंच ते उंच पद पाया जाता है। पोप की कितनी बड़ी दरबार है। हर एक धर्म में दरबारें हैं। यह दरबार एक ही बार लगती है। थोड़े समय के लिए पावन बनने की दरबार। एक अक्षर सुन और अच्छी रीति सुमिरण करना है। कहा जाता है सुमिरण सुमिर2 सुख पावो। कलह–कलेश मिटे सब तन के। जीवनमुक्ति का अर्थ भी सब नहीं समझते सिवाय तुम बच्चों के। जो बच्चे सर्विस पर रहते हैं उनका उंच पद है ;क्योंकि बहुतों को गेट बताने के निमित्त बनते हैं। बच्चों को अच्छी रीति समझना है यह पुरानी दुनिया है। निराकार बाप ही हमारा टीचर भी है। तुम्हारी आत्मा आरगन्स द्वारा पढ़ती भी है। फिर औरों को पढ़ाती भी है। अपन को आत्मा समझना है। जैसे कि भाई को हम बाप का संदेश सुनाते हैं देहअभिमान में आने से इतना समझते नहीं हैं। विकार में गिरना यह है काम कटारी। तुमको कोई कटारी मारे तो समझो डाकू खून करते हैं। खून2 कह रड़ी मारनी चाहिए। काम कटारी आदि,मध्य,अंत दुःख देती है। यह डाकुओं से भी बदतर है। तुम बच्चों को नफरत आती है। यहां तुम बाप के पास आते हो। वहां है आसुरी संग। यहां है ईश्वरीय संग। आसुरी संग बोरे, ईश्वरीय संग तारे। ईश्वरीय संग न है तो आसुरी संग है। इसको कहा जाता है सतसंग तारे। वो तो जन्म जन्मांतर करते हो। अब जानते हो सत शिवबाबा का संग हमको घर ले जाता है। जितना पढ़ेंगे, जितना याद की यात्रा में रहेंगे विकर्म विनाश होगा और पवित्र बनेंगे। बच्चों को भी औरों को आप समान बनाने का करना है। खुदाई खिदमतगार भी तुम बनते हो। सच्चे2 सैलवेशन आर्मी तुम हो। रेडक्रॉस सोसाइटी तुम हो। गोले में रेडक्रॉस है ना। दिखाया जाता है 4भाग कैसे होते हैं। अब बच्चे जानते हैं सतयुग,त्रेता में तो भक्ति होती नहीं। अभी भक्ति का अंत है। बच्चे जानते हैं बाप (आया) है तो भक्ति खतम हो जाती है। यह भी तुम जानते हो तो फिर औरों को भी समझाना चाहिए। बच्चों को चित्रों आदि पर समझाय होशियार किया जाता है। तुम हो स्वर्ग में ले जाने वाले पंडे। रूह को पंडा भी कहा जाता है। बच्चों को एक भी मुरली मिस न करनी चाहिए। कोई न कोई ऐसी प्वाइंट्स आ जाती है जो कि औरों को समझाने में सहज हो। बोलो शिवबाबा ज्ञान का सागर ,पतित–पावन है। बाप हमको पावन बनाय रहे हैं। सृष्टि के आदि,मध्य,अंत की नालेज हमको दे रहे हैं। पुजारी से पूज्य बनाय रहे हैं। तुम्हारी आत्मा तो पवित्र थी न शांतिधाम में। पीछे चक्र में आती है। इस समय सब पतित हैं। यह पतित दुनियां का अंत है। फिर पावन दुनियां कैसे बने?बाप आकर श्रीमत देते हैं। आत्मा ही पतित वा पावन बनती है। अब बाप कहते हैं कि मुझे याद करो। यह वही महाभारी लड़ाई है। जबकि गीता के भगवान ने राजयोग सिखाया था। भगवान श्रीकृष्ण नहीं बेहद का बाप ही स्वर्ग का रचयिता है जो स्वर्ग का वर्सा देते हैं। हम भी ले रहे हैं। शिवबाबा आय श्याम से सुंदर बनाते हैं। शिवबाबा को सदैव सुन्दरम् कहा जाता है। है भी सुंदर मुसाफिर। तुम बच्चों को काम चिक्षा से उतार ज्ञान चिक्षा पर बिठाते हैं। काम चिक्षा पर बैठ सब काले हो जाते हैं। फिर तुम बच्चों को अब सुंदर बनाय रहे हैं। मूल बात है याद की। अपने को आत्मा समझो और याद करना है। बाप एक ही बार आते हैं राजयोग सिखाने सभी बच्चों को। तमोप्रधान दुनियां से सतोप्रधान बनाते हैं। सर्व का सद्गति दाता सर्व दुःख हरने वाला एक बाप ही है। फिर हम सदैव सुख ही सुख देखेंगे यह जानते हो। हमारे सुख के दिन आते हैं। बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। बच्चे कहते हैं बाबा हम आपको भूल जाते हैं। अरे, तुम तो मूर्ख हो। बाप को भूल जाते हो। बाप क्या कहेंगे?स्मृति नहीं आती है कि हम बात किससे करते हैं। देहअभिमान में आने से देह को ही देखते हैं। बाप को भूल जाते हैं। आधा कल्प तुमने याद किया है। अब आया हूँ। सिर्फ कहता हूँ कि मुझे याद करो और कोई तकलीफ

नहीं देता हूँ। फिर भी तुम भूल जाते हो। इसको कहा जाता है माया। अपने को आत्मा समझो।.....